जून - जुलाई 2015
द्विमासिक पत्रिका
सत्यापित क्र. HAR HIN 04496/07/1/2007-T.C.

वर्ष-9 अंक-2
25 जुलाई 2015

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा

परामर्शदाता : प्रान्त सेवाप्रमुख : श्री सतीशचन्द्र सिंधवानी, रोहतक। मो. 094667-25772

स्वामी : सेवा भारती (पंजी.), हरियाणा। अध्यक्ष : प्रो. डॉ. बुद्ध सिंह
सी-7, अशोक विहार, फेज़ 2,
गुड़गांव-122001 & 099718-02274

सम्पादक एवं प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा
ई-230, अर्जुन गेट, करनाल-132001
& 0184-2255852, 2255874

पत्रिका प्रबन्धक :
ओम प्रकाश वर्मा, एम.ए.बी.एड.
1414/13, अर्बन एस्टेट, करनाल-132001

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा का सम्पादन, लेखन व अन्य सब कार्य अवैतनिक हैं

एक दृष्टि, एक लक्ष्य, समग्र विकास : अपना देश विश्व में प्राचीनतम देश है। हमारे ऋषि-मुनि सम्पूर्ण विश्व के सुख की कामना हज़ारों वर्षों से करते आये हैं : **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभागभवेत्।**। समाज में कोई भी व्यक्ति दुःखी, पीड़ित, वंचित तथा अभावग्रस्त न रहे, इस भावना से पीड़ितजनों की सेवा करने वालों की एक श्रेष्ठ परम्परा सदियों से हमारे यहाँ चली आयी है। गुजरात के श्रेष्ठ संत नरसी मेहता ने ऐसे जनों को ही 'वैष्णव जन' कहा है-जो पीर परायी जानते हैं, पाप-पुण्य की संकल्पना को भी इसी भाव से परिभाषित किया गया है। संत तुलसीदास का प्रसिद्ध वाक्य है "परहित सरस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाहीं।" यह सनातन सत्य है। ऐसी सेवा, कर्त्तव्य भाव व पूजा भाव से करनी चाहिए, यही हमारे श्रेष्ठ पूर्वजों ने हमें सिखाया है। श्रद्धेय रामकृष्ण परमहंस ने कहा "शिव भाव से जीवसेवा।" स्वामी विवेकान्नद ने समाज के ऐसे दुःखित पीड़ित जनों को ईश्वर के रूप में देखा। उनका प्रसिद्ध वाक्य है-"मैं उस प्रभु का सेवक हूँ, जिसे अज्ञानवश लोग मनुष्य कहते हैं।" यही कारण है कि आज भी अपने देश में लाखों बंधु-भगिनी ऐसे हैं जो अपने समाज के ऐसे 'प्रभुजनों' की सेवा इसी श्रेष्ठ और पवित्र भाव से तथा प्रचार-प्रसिद्धि व सम्मान से दूर रहते हुए कर रहे हैं, वे व्यक्तिगत-पारिवारिक स्तर पर तथा अन्य संस्थाओं के द्वारा सेवा कर रहे हैं। किन्तु आज हमारे प्रचार माध्यमों द्वारा ऐसे श्रेष्ठ-पवित्र सेवा कार्यों का प्रचार कम मात्रा में होता है। दुर्भाग्यवश समाज की दूषित-विकृतियों का प्रचार अधिक मात्रा में हो रहा है। प्रत्यक्ष समाज में जाकर यदि कोई अध्ययन करे तो आज भी समाज में दुर्जनशक्ति से सज्जनशक्ति अधिक है। स्वार्थी-भ्रष्टाचारी से निःस्वार्थ समाज सेवक जनों की संख्या अधिक है। यह सत्य सभी के सामने

न आने के कारण ही समाज में एक प्रकार से निराशा, हताशा उसके कारण उदासीनता, नकारात्मक भाव आता है और मन में निष्क्रियता बढ़ती है। ऐसे समय में समाज में इस प्रकार के सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं को एक साथ लाना, आपसी परिचय और एक दूसरे के कार्य की जानकारी का आदान-प्रदान करने से सभी के मन का आत्मविश्वास बढ़ाकर, समाज को सही दिशा में परिवर्तन करते हुए समाज को समतायुक्त, शोषणमुक्त, निर्दोष और सुखी बनाने का निश्चय अधिक दृढ़ करें। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से 1,68,000 से अधिक सेवा कार्य देश में चल रहे हैं। ये सारी सेवा सरिताएँ अपने सेवा के पवित्र जल से इस समाज की भूमि को सुजलां-सुफलां-उर्वरा बनाने का सफल प्रयास कर रही हैं। 'मा कश्चित दुःखभागवेत्' कल्पना को साकार करने हेतु सेवा का यह प्रवाह अनवरत चलता रहे, वंचित समाज का संपूर्ण वर्ग स्वावलंबी, स्वाभिमानी और राष्ट्रीय भाव से ओत-प्रोत हो, जिससे भविष्य में एक सेवा लेने वाला और एक सेवा करने वाला ऐसे दो वर्ग न रहें। ऐसा समाज हमें बनाना है। **-सुहास हिरेमठ,** अखिल भारतीय सेवा प्रमुख

श्रेष्ठ दान : लेना और देना मनुष्य मात्र के जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया है। व्यक्ति, माता-पिता, मित्र, समाज, देश और विश्व के साथ ही, उसके चातुर्दिक फैली प्रकृति से सदैव लेता ही रहता है-वायुमण्डल, धरती, फल, फूल, अमृततुल्य जल, अन्नादि। यही प्रक्रिया सतत् मृत्युपर्यन्त चलती रहती है। जिस प्रकार लेते रहना व्यक्ति का स्वभाव है, उसी प्रकार देना भी उसका संस्कार है। जिसमें किसी वस्तु पर से अपना 'स्वत्व' दूर होकर दूसरों का हो जाए, यह किसी भी वस्तु या पदार्थ का हो सकता है, परंतु दान का संबंध प्रमुख रूप से अर्थ से जोड़ दिया जाता है। समाज से प्राप्त सेवाओं अथवा सुविधाओं के बदले धन देना व्यक्ति की विवशता होती है, इसे दान नहीं कहा जा सकता। वास्तविक 'दान' में त्याग किए गए धन के बदले में कृतज्ञता प्राप्त करने की लालसा का कोई महत्त्व नहीं होता है। 'दान मानव-संस्कार की एक कसौटी है। मानव-प्रकृति के अनुसार दान प्रमुख रूप से तीन प्रकार के होते हैं-सात्विक, राजसिक और तामसिक। मनु ने 'दान' के महत्त्व को दाता की मानसिक स्थिति पर निर्भर करते हुए कहा, कि दाता जिस भाव से जो-जो दान करता है, उसी भाव से उसे ही वह आदरपूर्वक प्राप्त करता है। प्राचीनकाल से ही हमारी सभ्यता और संस्कृति में चली आ रही 'दान' की परंपरा में परिवर्तन आने से 'दान' की महिमा बढ़ी है। धर्म-शास्त्रों में दान की

पवित्रता के संबंध में आचार्य देवल का कहना है, कि जो धन किसी को बिना कष्ट दिए अपने श्रम द्वारा अर्जित हो, उसे ही दान दिया जाना चाहिए। कन्यादान, अन्नदान, वस्त्रदान, भूमिदान, विद्यादान, रक्तदान, दान के विविध रूप हैं। हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं में प्रचलित दानों में 'कन्यादान' ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। कन्या परिवार के कल्याण का प्रतीक और गौरव के साथ भूषण होती है। कन्या ही परिवार का स्वाभिमान, विनम्रता, ममता और सेवा की प्रतिमूर्ति होती है। कन्या अपने व्यवहार और गुणों के द्वारा पति-कुल और पितृ-कुल दोनों को ही ऊँचाईयों पर पहुँचाकर महान बनाने के साथ ही पति-कुल की वंशबेलि का संवर्धन करती है। **-डॉ॰ राजेन्द्र दीक्षित**

◆ ◆ ◆

सच्ची कहानी

हे प्रभु! तेरी लीला न्यारी

-रामकुमार आत्रेय

आज के सम्मान-समारोह की अध्यक्षता कर रहे माननीय उपायुक्त महोदय, पुलिस अधीक्षक जी, उप-मंडलाधीश जी, तहसीलदार साहब, नगर परिषद् के प्रधान, नगर पार्षदो, मेरे माता-पिता के समान सम्मानित वृद्धजनो, भाईयो-बहनो! इस समारोह में उपस्थित रहकर अपना बहुमूल्य समय देने के लिए मैं आपकी आभारी हूँ। आज के इस सम्मान-समारोह के मुख्य आकर्षण अर्थात् सम्मान प्राप्त करने वाले दोनों वृद्धजन जो सौभाग्य से पति-पत्नी हैं और आप सब के समक्ष मंच पर विराजमान हैं, इन्हें मैं श्रद्धापूर्वक प्रणाम करती हुई आपकी अनुमति से कार्यवाही को आगे बढ़ा रही हूँ।

आइए! पहले मैं आपको अपना परिचय भी दे दूँ। मैं इस जनपद से सटे जनपद हिसार की पुलिस अधीक्षक कुमारी दिव्या हूँ। भारतीय पुलिस सेवा में कार्यभार ग्रहण किए हुए मुझे अभी चौदह मास ही हुए हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन मैं इस राज्य के अन्य नगरों में भी करूँगी। आज का यह आयोजन अन्य किसी स्थान पर हो ही नहीं सकता था। जिस घटना की वजह से ये वृद्ध आज सम्मानित किये जा रहे हैं, वह घटना आज से लगभग सताईस वर्ष पूर्व यहीं घटी थी। मंचासीन वृद्ध पुरुष का एक रिश्तेदार इस नगर में रहता था, ये तब उसी से मिलने यहाँ आए थे। रिश्तेदार निर्धन था, किराए के कमरे में रहता था। कमरे के पास कोई शौचालय नहीं था। सुबह होते ही इन लोगों को शौचादि से निवृत होने के लिए नगर में बाहर खुले में जाना होता था। पूर्व दिशा में एक छोटा सा तालाब था। तालाब के आसपास छोटी-छोटी झाड़ियाँ थीं। सुबह के चार साढ़े-चार का समय होगा। ये वृद्धजन

जब एक झाड़ी के पीछे शौच के लिए बैठे, तो इनकी नज़र एक छोटी-सी पोटली पर पड़ी। ये चाहकर भी वहाँ से नज़र नहीं हटा पाए। पोटली के भीतर इन्हें कुछ हिलता हुआ सा दिखाई दे रहा था। एक बार तो ये भयभीत होकर वहाँ से उठे और वापिस चल दिए। परन्तु इनका मन इन्हें फिर से उस पोटली के समीप खींच लाया। ये नीचे झुके, पोटली पर वस्त्र को हटाकर देखा तो बिजली की तरह करंट सा लगा। पोटली में एक शिशु था, जीता-जागता, अपना अगूंठा चूसता हुआ। कुदरत का कमाल! शिशु मुश्किल से 10-12 घंटे पहले इस धरती पर आया होगा। ऐसा लगा कि शिशु को उसकी माँ थोड़ी देर पहले ही वहाँ रख गई होगी। यदि वहाँ पर घूमने वाले आवारा कुत्तों अथवा सुअरों की दृष्टि उस शिशु पर पड़ी होती तो वे उसे अपना शिकार बना चुके होते। अचानक शिशु ने रोना शुरू कर दिया। शायद वह भूखा था उसे माँ के सान्निध्य तथा उसके दूध की ज़रूरत थी। ये वृद्धजन स्वयं को नहीं रोक पाए, इन्होंने शिशु को हाथों में उठा लिया, तभी कोइ चीज़ वस्त्रों में से नीचे गिरी। इन्होंने झुककर उसे भी उठा लिया, वे सौ-सौ रुपये के दस नोट थे। स्थिति स्पष्ट थी, कोई युवती या फिर कोई विधवा लोकलाज के भय से उस शिशु को वहाँ रख गई थी, साथ में सौ-सौ के दस नोट भी ताकि शिशु को उठाने वाला उसे किसी सुरक्षित जगह पर पहुँचा सके। इन्होंने ध्यान से देखा तो पाया कि शिशु लड़की है। तब तक इनका रिश्तेदार भी इनके पास आ गया था। इन दोनों ने मिलकर एक अनजानी औरत के नाम अपनी बच्ची को वहाँ फैंकने के लिए नज़दीक की पुलिस चौंकी में प्राथमिकी दर्ज करा दी। बाद में इनकी सहमति से पंचनामा तैयार करके वह बच्ची इन्हें ही सौंप दी। ऐसी बात नहीं थी, कि इनके यहाँ कोई संतान नहीं थी। एक बेटी ने तो तीन दिन पूर्व ही इनके यहाँ जन्म लिया था। दो वर्ष का एक बेटा भी मौजूद था। इनका कहना था, कि प्रभु ने ही इन्हें उस बच्ची के पास भेजा था, नहीं तो वहाँ शौच के लिए अनेकों लोग थे, वह बच्ची उन में से किसी को भी मिल सकती थी, नहीं मिली, क्यों?

मैं इन सम्मानित वृद्ध की कुछ जानकारी आपको दे दूँ। जानकारी वही दूँगी जो इन्होंने खुद मुझे बताने को कहा। इनकी जाति के विषय में बताते हुए मुझे बुरा लग रहा है। मैं जाति पाति में विश्वास नहीं रखती, जाति से ये नाई हैं, ऐसा बताते हुए ये शर्म महसूस नहीं करते। जब वह बच्ची इनके यहाँ आई, तब ये अपने गृह नगर में एक सड़क के किनारे पेड़ की छांव में

दिन भर बैठे रहते थे। एक टूटी हुई कुर्सी पर ग्राहक को बिठाकर पत्थर पर घिसकर तीखे किए हुए उस्तरे से उनकी दाढ़ी बनाते, बदले में चार-छह आने मिलते, उसी कमाई से अपने परिवार का पेट भरते। इनका कहना है, कि वह बच्ची ज्यों-ज्यों बड़ी हुई त्यों-त्यों इनका भाग्य भी बदलता गया। घरवाली भी बड़े लोगों के यहाँ झाड़ू-बर्तन का काम करती थी। जहाँ ये कुर्सी रखकर काम किया करते, वहाँ किसी डीलर ने एक नई कॉलोनी के प्लॉट काटे। सड़क के किनारे दुकानों के प्लाट भी तैयार किए। उसी जगह पर इन्होंने दुकान का प्लॉट ख़रीद लिया। पैसा ब्याज सहित किस्तों में देना था, फिर तो दुकान बनी और चल गई। धीरे-धीरे वहाँ एक अच्छी कॉलोनी विकसित हो चुकी है। इनके परिश्रम और सेवाभाव ने दुकान को चमका दिया। आज इनका एकमात्र अच्छा पढ़ा लिखा पुत्र उस दुकान को चलाता है। सरकारी नौकरी मिल सकती थी, पर उसने अपना खानदानी काम करना ही अच्छा समझा। अब उस नगर की मशहूर दुकान है, ये आप और इनका बेटा मशहूर केश-सज्जाकार हैं। पाँच-छः आदमी आज इनके आधीन काम कर रहे हैं।

इनके साथ जो सम्मानित महिला बैठी हैं, मैं पहले भी बता चुकी हूँ, ये इनकी धर्मपत्नी हैं। जितने भले इनके पति हैं, उनसे बढ़कर अच्छी ये हैं। जब ये उस बच्ची को इस नगर की झाड़ियों के बीच से उठाकर अपने घर लेकर पहुँचे, तो इसी महिला ने उसे अपनी खुद की बेटी की तरह अपनी छाती से लगा लिया। मैं पहले बता चुकी हूँ कि तब इनके पास एक और बच्ची थी जो तीन दिन पहले ही इनकी कोख से बाहर आई थी। इन्होंने उदारता पूर्वक उस बच्ची को भी अपनी बेटी के साथ दूध पिलाना शुरू कर दिया। दो वर्ष तक ये दोनों बच्चियों को दूध पिलाती रहीं। इन्होंने उस बच्ची को केवल दूध ही नहीं पिलाया, बल्कि उसे पाल-पोसकर पढ़ाया-लिखाया। उसे कभी यह तक नहीं बताया कि वह तो एक लावारिस बच्ची थी, जो उन्हें तालाब के किनारे पड़ी हुई मिली थी। मेरे पास शब्द नहीं हैं, इनकी महानता का वर्णन करने के लिए। लोग तो अपनी ही औलाद को गालियाँ देते नहीं थकते, जबकि इस दम्पत्ति ने एक लावारिस लड़की का पालन-पोषण करके उसे पढ़ा-लिखाकर अपने मज़बूत पाँवों पर खड़ा होने लायक बना दिया, पर उसे इस बात का आभास तक नहीं होने दिया, कि वह एक तथाकथित अवैध संतान है। क्षमा करना मैंने 'अवैध' शब्द जान-बूझकर प्रयोग किया है, सिर्फ़ यह बताने के लिए कि कोई भी संतान अवैध नहीं होती। लावारिस बच्चे-बच्चियों के लिए इस

शब्द का उपयोग करना प्रकृति का घोर अपमान है। पुरुष और स्त्री प्रकृति के ही दो रूप होते हैं। धरती पर जो भी जन्म लेता है, वह पुरुष और स्त्री के मिलन का परिणाम होता है। हम सब इसी तरह इस पृथ्वी पर आए हैं, फिर ऐसे बच्चों को अवैध क्यों कहा जाए? पुरुष और स्त्री के मिलन के परिणामस्वरूप जन्म लेने वाले बच्चे अवैध नहीं हो सकते। खैर, छोड़िए इस बहस को, पड़ौसियों तक को भी पता नहीं चलने दिया इस दंपति ने, कि इनकी दूसरी बच्ची इन्हें कहीं से पड़ी मिली थी। आरम्भ में किसी ने पूछा भी तो इन्होंने कह दिया कि पहली बच्ची के जन्म लेने के कुछ देर बाद अचानक बच्ची की माँ के पेट में फिर से दर्द उठा और दूसरी बच्ची ने जन्म ले लिया।

अब लगे हाथों आपको इतना और बता दूँ कि उस लड़की को इस तथ्य का ज्ञान कब हुआ। लड़की जब स्कूल में जाने लगी तो सौभाग्य से वह हर वर्ष श्रेणी में प्रथम आने लगी तथा उसे छात्रवृति मिलने लगी, वह लड़की बड़ी होने लगी और उन्नति के पथ पर चल निकली। ज़्यादा क्या कहूँ, लगभग पाँच वर्ष पूर्व केन्द्रीय लोकसेवा आयोग द्वारा एक बड़े प्रशासनिक पद के लिए होने वाली परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ तो लड़की का नाम सफल उम्मीदवारों में शामिल था। जब उसने इस बात की सूचना इस दम्पत्ति को दी तो यह अपनी खुशी को छिपा नहीं सके। पिता ने लड़की को अनायास छाती से लगा लिया, तब भाव विह्वल होकर इनके मुंह से निकल गया - **"काश बेटी! तू हमारी अपनी संतान होती।"** लड़की इन शब्दों को सुनकर बुरी तरह से आहत हो उठी। उसने सत्य को जानने के लिए इन पर दबाव डाला, तो इन्हें सब कुछ बतलाना पड़ा। आज इस 'सत्य' का उद्घाटन मैं आप सब के सामने कर रही हूँ। आखिर में इतना और बताना अपना कर्तव्य समझती हूँ कि उस लड़की ने कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए हैं, जिन्हें उसने कार्य रूप देना प्रारम्भ भी कर दिया है। लड़की ने अपने प्रथम निर्णय के अनुसार एक ऐसी संस्था की स्थापना की है, जिसमें ऐसी माताओं द्वारा लावारिस छोड़े गए बच्चों का पालन पोषण होगा, जिन्हें वे सामाजिक तिरस्कार के भय से अपने साथ नहीं रख पातीं। यहाँ मैं उन युवतियों से अपील कर रहीं हूँ कि वे अपमान के भय से अपनी कोख में आए बच्चों की हत्या न करें। वे चुपचाप उस लड़की द्वारा चलाई जा रही संस्था में आएं, बच्चों को जन्म दें, फिर यदि वे अपने घर लौटना चाहें तो खुशी से लौट जाएं। उनकी पहचान कभी सार्वजनिक नहीं की जाएगी। किसी कूड़े के ढेर या शौचालय में कोई लावारिस शिशु यदि आपको

पड़ा मिले तो उसे उस संस्था में लाकर सौंप दें। उसके पालन-पोषण तथा पढ़ाने-लिखाने की ज़िम्मेदारी संस्था की रहेगी। यदि किसी लड़की को उसके माता-पिता ने ग़ैर कानूनी ढंग से संतान को जन्म देने के कारण घर से निकाल दिया हो तो वह लड़की भी इस संस्था में शरण ले सकती है। उसे ऐसे बच्चों के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी दी जाएगी। दूसरा निर्णय लड़की ने यह लिया है कि वह आजीवन विवाह नहीं करेगी। भारत सरकार की नौकरी करते हुए जो वेतन उसे मिलता है वह इसी संस्था के हित में खर्च करेगी। संस्था में पलने वाले बच्चों के लिए वह माँ भी होगी और पिता भी। ये महानुभाव जो उस लड़की के माता-पिता हैं, इसी संस्था में रहेंगे। तालियाँ..... रुकिए! अभी तालियाँ बजाने का समय नहीं आया। यदि ऐसा करना बेहद ज़रूरी हो तो कृपया, बाद में कर लेना। इस नगर में इस समारोह का आयोजन करने का एक और भी कारण है। वह यह है कि उस लड़की को जन्म देने वाली वह अभागी माँ, हो सकता है एक प्रौढ़ एवं सम्मानित महिला के रूप में अभी भी इस नगर के अन्दर मौजूद हो, कल जब इस समारोह के सचित्र विवरण अखबारों में प्रकाशित होंगे तो उसे भी इस बात का ज्ञान हो जाएगा, कि जिस बेटी को उसने झाड़ियों के बीच फेंक दिया था, वह आज भारत सरकार की सेवा में एक ऊँचे पद पर कार्यरत है। मैं उसे किसी प्रकार की आत्मग्लानि में डुबाना नहीं चाहती। संभव है उस पर बलात्कार हुआ हो या फिर प्यार-व्यार के चक्कर में पड़कर वह ग़लती कर बैठी हो। कल इस समाचार को पढ़कर वह शायद अपनी ग़लती को महसूस करके भविष्य में भी किसी अन्य लड़की को ऐसी ग़लती करने से रोक सके। श्रद्धेय जनो! अन्त में मैं आप जैसे सम्मानित व्यक्तियों के समक्ष यह स्वीकार करती हूँ, कि मैं वही भाग्यशाली लड़की हूँ जिसे इस दम्पत्ति ने कृपापूर्वक अपना मानकर यह सब स्वीकार करने के लायक बनाया है। (गला रुंद्ध गया, आँखें अश्रु से भर आई) अब मैं उपायुक्त महोदय से प्रार्थना करती हूँ कि वे मेरे पूजनीय वृद्ध पिता को शाल ओढ़ा कर तथा मेरी माता को पुष्प-गुच्छ प्रदान करके उनका सम्मान करें। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच बूढ़े दम्पत्ति ने लड़की को छाती से लगा लिया और वह फूट-फूट कर रोने लगे। अखबारों के संवाददाताओं के कैमरे चमक

कार्यकर्ताओं से नम्र निवेदन : अपनी सेवा भारती समिति के आय-व्यय का पूरा विवरण लेखा निरीक्षक से जांच करवाकर प्रान्तांश सहित तुरन्त सीधे (ONLINE) पंजाब नैशनल बैंक में या प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री शान्ति प्रकाश शर्मा को प्रान्त कार्यालय में भिजवाने का कष्ट करें। धन्यवाद!

छोड़ते हुए फोटो उतार रहे थे।

-साभार 'सेवा प्रेरणा'

कश्मीर का 'केसरिया' बाना

राजनीति में कुछ विद्वान? कांग्रेसी ऐसे मिले, जिनके बारे में मैं सोचता हूँ यह लोग कांग्रेस में कैसे रहते रहे? वास्तव में वे राष्ट्रभक्त थे भी कि नहीं, क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास है, कि कांग्रेसियों को न तो राष्ट्र का अर्थ पता है, न देश का, न धर्म का। अखण्ड भारत की तो कल्पना भी नहीं कर सकते, वे तो बस झूठी धर्मनिरपेक्षता का राग अलापते हुए सत्ता पर कब्ज़ा जमाए रखना चाहते हैं। -सम्पादक

भारत को जिस तरह विदेशी आक्रान्ताओं ने रौंदा, उसकी सबसे बड़ी मिसाल धरती पर स्वर्ग कहा जाने वाला कश्मीर है। अंग्रेज़ों से कभी भी यह बर्दाश्त नहीं हुआ, कि वे हिन्दू संस्कृति की गौरव गाथा कहते प्राचीन शिलालेखों और अवशेषों को इस देश की अस्मिता से जुड़ते देख पाते, अतः उन्होंने बहुत सोच-समझ कर 1846 में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र कुंवर दिलीप सिंह को ईसाई बनाकर अन्य सभी भाइयों की हत्या के बाद गद्दी पर बिठा कर उनके आगरा से काबुल तक फैले महान राज्य को ख़रीदा। यह ख़रीद उस ईस्ट इंडिया कम्पनी ने की थी, जिसने बंगाल के नवाब सिराजुदौला को 1757 में छल से गद्दार मीर जाफ़र की मदद से मारा था और बाद में उनकी उस समय की भारत की सबसे अमीर रियासत को अपने कब्ज़े में ले लिया था, मगर यह काम एक ऐसे अदने इंसान लार्ड क्लाइव ने किया था, जो कम्पनी की सेवा में मद्रास में एक क्लर्क बनकर आया था। नवाब की भारी-भरकम फ़ौज को उसने गद्दार मीर जाफ़र को अपने साथ मिलाकर न केवल हरा दिया, बल्कि नवाब का सिर भी कलम कर दिया था। अंग्रेज़ों के लिए उनके राज्य में हिन्दू या मुसलमानों का महत्व केवल एक उपभोक्ता वस्तु की तरह रह गया था। वे मुसलमान नवाबों की मदद उन्हें हिन्दू राजाओं से लड़ाने के लिए करने लगे और अपनी फ़ौज का रुतबा बढ़ाने लगे थे। यह इतिहास की छोटी-मोटी घटना नहीं थी, कि महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने (ईसाई) बनाया और उसे इंग्लैंड ले गये। जो लोग स्वतन्त्र भारत में ईसाई मिशनरियों के सेवा भाव की खुले कंठ से प्रशंसा करते हैं उन्हें इतिहास की इस सबसे बड़े धर्म परिर्वतन की घटना का संज्ञान लेकर वर्तमान परिस्थितियों का मूल्यांकन करना चाहिए। आधुनिक युग में मदर टेरेसा का भी ऐसा ही उदाहरण है जो स्पष्ट रूप में कहती थी कि मैं सेवा

कार्य गरीबों को ईसाई बनाने के लिए करती हूँ। हम भारतीय विशेष रूप से हिन्दू सेवा को निःस्वार्थ भाव से दूसरों के लिए किए कर्म को सेवा कहते हैं।

पंजाब रियासत के कम्पनी को बिक जाने के बाद भारत में बचा ही क्या था? एक टूटी-फूटी मुग़लिया सल्तनत, जिसका निज़ाम दिल्ली के आस पास तक सिमट चुका था और बूढ़ा बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र सिर्फ़ शायरी में मशगूल होकर अपने ग़म भुलाने का सामान ढूंढने लगा था। हर राजे-रजवाड़े में कम्पनी बहादुर का फ़रमान रेज़ीडेंट साहब की मार्फ़त इस देश की रियाया को हिन्दू-मुसलमानों में बांटने में लग चुका था। जहां हिन्दू रियाया ज़्यादा थी वहां का हिन्दू राजा और और जहां मुसलमान रियाया ज़्यादा थी वहां का मुसलमान नवाब, अंग्रेज़ों की राजनीति को सफ़ल बना रहा था। जब जम्मू कश्मीर के महान सम्राट ललितादित्य का शासन तीन-चौथाई अखंड भारत पर काबिज़ था और दुनिया की बड़ी सल्तनतों में इसकी गिनती होती थी। इतिहासकारों ने इस सम्राट के बारे में बहुत कम लिखा है अथवा अंग्रेज़ों के मनमाफ़िक इतिहास लिखने वालों ने इस सम्राट की हैसियत को पूरी तरह भुला ही दिया। आज कश्मीर के मसले को पाकिस्तान के बन जाने के बाद कुछ राष्ट्र विरोधी लोग जिस तरह मज़हब के आइने में देखने की कोशिश कर रहे हैं उनके दिमाग़ में सिर्फ़ हिन्दू संस्कृति की गौरव गाथा को शर्मसार करने का विचार छिपा हुआ है। पाकिस्तान का निर्माण इसके अलावा और कुछ नहीं था, कि यह हिन्दू संस्कृति के 'वसुधैव कुटुम्बकम' दर्शन की उसके ही घर में हत्या करना था और तय करना था, कि भारत के लोगों के आस्था स्थान, धर्म बदलने के साथ ही बदल गये हैं यहां तक कि उनके पुरखे भी बदल दिये गये हैं। इस प्रदेश में लोगों का मज़हब पिछले सात-आठ सौ वर्षों में बदल दिए जाने के बावजूद उनकी धरती की तासीर नहीं बदली है और उसमें खिलने वाले फूलों के रंग नहीं बदले हैं। जब मज़हब किसी धरती की तासीर को बदलने की कुव्वत नहीं रखता तो वह किस तरह उस ज़मीन का ईमान बदल सकता है? इसी कश्मीर वादी में श्रीनगर से केवल 60 कि.मी. दूर सम्राट ललितादित्य का बनवाया हुआ मार्तंड सूर्य मन्दिर है, जिसके अवशेष आज भी बुलन्द आवाज़ में ऐलान करते दिखते हैं कि कोणार्क के सूर्य मन्दिर की आभा से भी कहीं अधिक आभा एक ज़माने में इस सूर्य मन्दिर के भीतर रखी हुई 'रश्मि रथी' देव की स्वर्ण प्रतिमा की रही होगी। यह यूनानी और भारतीय स्थापत्य कला का विशिष्ट नमूना है, जो इस बात का प्रमाण भी है, कि सम्राट

ललितादित्य की तूती यूनानी सम्राट के यहां भी बोलती थी, मगर क्या ग़ज़ब की स्थापत्य कला है, कि सैंकड़ों वर्षों तक आक्रमणों के बीच भी यह आज सिर उठाये खंडहरों के रूप में खड़ी है। यह कोई दैवीय चमत्कार नहीं है, बल्कि हिन्दू संस्कृति की आत्मनिष्ठ शक्ति का प्रतीक है। मगर क्या, कुछ लोगों ने तूफ़ान इस बात पर खड़ा किया हुआ है कि महाराष्ट्र व हरियाणा की राज्य सरकारों ने गौहत्या पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगा कर गौमांस की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया है? ऐसे-ऐसे कुतर्क पेश किए जा रहे हैं, जिनका विज्ञान से कोई लेना-देना नहीं है। हम पेड़-पौधों से लेकर पशु-पक्षियों और नदियों की पूजा करते हैं, तो केवल धर्मांधता के कारण नहीं, बल्कि वैज्ञानिक कारणों से, मगर क्या सितम हो रहा है इस 'भरत भूमि' पर कि हम अपनी ही धरती के मानकों को मज़हब और रिलिजन के आइने से देख रहे हैं।

-साभार पंजाब केसरी पर आधारित

शिक्षित नारी, समाज को देगी सही दिशा

24 मई 2015 सेवा भारती भिवानी की महिला इकाई द्वारा आर्य कन्या उच्च विद्यालय सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में सेवा कार्यों में मातृशक्ति की सहभागिता पर चर्चा हुई। समारोह की अध्यक्षता हाईकेम महिला क्लब की सचिव शशि रूंगटा ने की। मुख्य अतिथि डॉ॰ नीलम शर्मा तथा मुख्यवक्ता पद्मेश बवेजा जी राष्ट्र सेविका समिति की अधिकारी ने नारी से सशक्त बनने का आह्वान करते हुए समाज में सक्रिय भागीदारी निभाने पर ज़ोर दिया। बच्चों को संस्कारवान बनाने और समाज निर्माण में महिलाओं की अहम भूमिका है, इसलिए भारत में मातृशक्ति सर्वदा पूजनीय रही है। महिलाओं को सशक्त और सबल बनाने के लिए खुद प्रयास करने होंगे। इसके लिए उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य व स्वावलंबन विषय पर शिक्षा को सबसे बड़ा प्रभावशाली माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि बेटी शिक्षित होगी तो तीन परिवारों को सबल बनाएगी। मुख्य अतिथि डॉ. नीलम शर्मा ने कहा कि महिलाएं समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। समाज और राष्ट्र को आगे ले जाने की ज़िम्मेवारी उन्हीं के मज़बूत कंधों पर है। कार्यक्रम में सेवा भारती द्वारा तेपला में संचालित बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने वाले छह बच्चों की माताओं को सम्मानित किया गया। इस दौरान राष्ट्रभक्ति गीत-नृत्य की प्रस्तुतियां दी गई। इस कार्यक्रम में 350 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। मंच संचालन अनुराधा और सुषमा शर्मा ने किया। सारिका कोकड़ा ने माननीय अतिथियों

का धन्यवाद किया। कार्यक्रम में सर्वश्री लीला शर्मा, डॉ. आशा वधवा, मनीषा चौधरी, डॉ. प्रवेश लता, डॉ. दीपिका कौशिक, सीमा बंसल, मनोहर लाल, सचिव अनिल कुमार, ललित कुमार, प्रवीन कुमार, सोमदत्त शर्मा, सुरेश मोरवाल, गुरु प्रसाद उपस्थित रहे। **-प्रहलाद राय सोलंकी**, प्रांत उपाध्यक्ष

हिन्दू संस्कृति की कितनी गहरी जड़ें : भिवानी नगर सेवा भारती की बहिन लीला शर्मा अति उत्साही कार्यकर्ता हैं। उन्होंने बस यात्रा में, खेतों में झोपड़ियां देखी, अगले दिन वहां पहुंचकर सम्पर्क किया। सभी अशिक्षितों को पढ़ने और सिलाई सीखने का प्रस्ताव किया। सिलाई सीखने हेतु 15 बहिनों ने, पढ़ने हेतु 20 बच्चों ने नाम लिखवाये। खेतों में 2 पक्के घरों में सम्पर्क किया। एक बहिन पढ़ाने और एक बहिन सिलाई सिखाने को तैयार हुई। अगले दिन दोनों केन्द्र आरम्भ हुए।

15 दिन बाद मुझे जाने का अवसर मिला। सिलाई केन्द्र में सीखने वाली 15 बहिनों ने कभी स्कूल के दर्शन नहीं किए थे, फिर भी मैंने कुछ बातें पूछीं, जिस बहिन को जानकारी हो हाथ खड़ा कर दे। मैंने पूछा दशरथ कौन था? जवाब सही। दशरथ के कितने पुत्र थे? जवाब सही। राम के कितने भाई थे? जवाब सही। राम के कितने पुत्र थे? जवाब सही। पुत्र लव, कुश की माँ का नाम? उत्तर सही। सीता के पति का नाम? उत्तर सही। दो बहिनों को गायत्री मंत्र याद। खेतों, जंगलों, झोपड़ियों में रहने वाले अनपढ़ लोगों के हृदय में हिन्दुत्व, हिन्दू संस्कृति की कितनी गहरी जड़े हैं, ऐसा आभास हुआ। **-अर्जुन**, भिवानी

अनुभव की बात : देश के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं देशभक्त स्व. घनश्यामदास बिड़ला ने एक पत्र अपने पुत्र श्री बंसतकुमार बिड़ला को लिखा था :

चि. बसंत! यह जो लिखता हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना। अपने अनुभव की बात कहता हूँ। संसार में मनुष्य-जन्म दुर्लभ है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया, वह पशु है। तुम्हारे पास धन है, तन्दुरुस्ती है, अच्छे साधन हैं, अगर उनको सेवा के लिए उपयोग किया, तब तो साधन सफल हैं अन्यथा वे शैतान के औज़ार हैं। तुम इन बातों को ध्यान में रखना। धन का मौजमस्ती, शौक में कभी उपयोग न करना। धन सदा रहेगा भी नहीं, इसलिए जितने दिन पास में हैं, उसका उपयोग सेवा के लिए करो, अपने ऊपर कम से कम खर्च करो, बाकी दुखियों का दुःख दूर करने में व्यय करो। ध्यान शक्ति है, इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना संभव है, इसका ध्यान रखो, अपनी संतान के लिए भी यही उपदेश

छोड़कर जाओ। यदि बच्चे ऐश-आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और हमारे व्यापार को चौपट करेंगे, ऐसे नालायकों को धन कभी न देना, उनके हाथ में जाए उससे पहले ही ग़रीबों में बांट देना। तुम बस यह समझना कि तुम इस धन के ट्रस्टी हो, तुम्हारा धन जनता की धरोहर है। तुम उसे अपने स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते। भगवान को कभी न भूलना, वह अच्छी बुद्धि देता है, इन्द्रियों को काबू में रखना वरना यह तुम्हें डूबो देगी। नित्य नियम से व्यायाम करना। भोजन को दवा समझकर खाना। स्वाद के वश होकर मत खाते रहना।

-घनश्यामदास बिड़ला

सेवा भारती, हिसार

महाराणा प्रताप जयन्ती व गुरू अर्जुन देव शहीदी दिवस : सेवा भारती हिसार द्वारा संचालित सभी छः विद्यालयों में बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

श्री नानू राम मंगल सेवा भारती माध्यमिक विद्यालय : विद्यार्थियों, अभिभावकों व सेवा भारती कार्यक्रर्ताओं ने महाराणा प्रताप जयन्ती व गुरु अर्जुन देव शहीदी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। विद्यार्थियों ने गीत, नाटक, भाषणों द्वारा दोनों महापुरुषों के जीवन पर प्रकाश डाला। महाराणा प्रताप एक सच्चे देशभक्त योद्धा, साहसी व स्वाभिमानी व्यक्ति थे। हल्दी घाटी का युद्ध इतिहास में आज भी महाराणा प्रताप की शौर्य गाथा को संजोये हुए है। महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक की समाधी आज भी उस युद्ध को बयां करती है। जब महाराणा प्रताप जंगलों में भीलों के साथ रह रहे थे तो उनके पुत्र अमरसिंह के हाथ से घास की रोटी भी एक जंगली बिलाव छीन ले गया। इसे एक विद्यार्थी ने बड़े ही शानदार राजस्थानी कविता द्वारा प्रस्तुत किया :

अरे घासरी रोटी ही जद, बन बिलावड़े ले भाग्यो।
नाहनो सो असरिया सिखा पड़यो, राणा रो सायो दुःख जाग्यो।।

उक्त पूरी कविता पढ़ने पर सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। गुरू अर्जुन देव ने किस प्रकार धर्म की रक्षा के लिए अपने आपको देश धर्म पर बलिदान कर दिया, बच्चों ने इसे नाटक के रूप में प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सी.डी. गर्ग (सी.ए), सेवा भारती के श्री आर.पी.गुप्ता, श्री पी. एस. सैनी व श्री रामनाथ बत्रा ने भाग लिया।

प्राथमिक विद्यालय ऋषि नगर ने महाराणा प्रताप जयन्ती व गुरू अर्जुन देव शहीदी दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों ने नाटक, कविता, भाषण व गीतों द्वारा महाराणा प्रताप के देशप्रेम, शौर्य व

त्याग को प्रस्तुत किया। गुरु अर्जुन देव जी के बलिदान दिवस को भी बच्चों ने कविता व भाषण द्वारा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अभिभावक, सेवा भारती कार्यकर्ता श्री सुर्दशन बंसल, श्री नरेश बंसल व विद्यालय के स्टाफ ने भाग लिया। छात्रों को महाराणा प्रताप व शहीद गुरू अर्जुन देव के जीवन से देशभक्ति की भावना पैदा करने का आह्वान किया गया।

दीप नगर विद्यालय में भी गुरु अर्जुन देव शहीदी दिवस व महाराणा प्रताप जयन्ती मनाई गई। सभी स्टाफ सदस्यों, अभिभावकों व विद्यार्थियों ने सच्चे देशभक्तों को याद किया। इस अवसर पर भाषण, गीत व नाटकों को प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर सेवा भारती से हिसार इकाई सचिव श्री विकास लाम्बा व श्री महावीर प्रसाद सांखला ने भाग लिया।

12 क्वार्टर विद्यालय में भी महाराणा प्रताप जयन्ती व गुरु अर्जुन देव शहीदी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय, स्टाफ, विद्यार्थियों व अभिभावकों ने भाग लिया। सेवा भारती से श्री बृजभूषण तनेजा, श्री चाननमल शर्मा ने भाग लिया। बच्चों ने गीत, भजन, नाटक व भाषण द्वारा दोनों देशभक्तों को याद किया।

सत्यनगर माध्यमिक विद्यालय ने भी महाराणा प्रताप जयन्ती व गुरु अर्जुन देव जी के शहीदी दिवस को बड़ी धूमधाम से मनाया। महाराणा प्रताप ने किस प्रकार अकबर से लोहा लिया व देशप्रेम की खातिर जंगलों में भी भटके। जंगलों में उन्होंने किस प्रकार भीलों की मदद से नई सेना बनाई व अन्ततः अकबर को परास्त किया। उन्होंने अपने स्वाभिमान की खातिर महल व सुख सुविधाएं त्याग कर जंगलों को चुना व अपनी प्रतिज्ञा अनुसार अकबर को पराजित करके ही महलों में सोए व चांदी के बर्तनों में भोजन ग्रहण किया। इस अवसर पर सेवा भारती से श्री रामवतार जी सभी स्टाफ सदस्य व विद्यार्थीयों के अभिभावकों ने गुरु अर्जुन देव जी की शहादत को याद किया।

सेवा भारती विद्यालय लाडवा गांव में भी महाराणा प्रताप जयन्ती व गुरु अर्जुन देव शहीदी दिवस को बड़े ही जोश से मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों ने नाटक, भाषण व गीतों द्वारा दोनों सच्चे देशभक्तों के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सभी स्टाफ सदस्य, अभिभावक व सेवा भारती कार्यकर्ता श्री रतन लाल कामरा, श्री हरीश शर्मा ने भाग लिया। बच्चों ने प्रतिज्ञा ली कि वे भी देश हित में अच्छा कार्य करेंगे।

गुरु शिष्य मिलन समारोह : 31 मई 2015 को सेवा भारती बाल विद्यालय 12 क्वार्टर से शिक्षा व सिलाई सीख कर के गए हुये छात्र, छात्राएं व सिलाई

केन्द्र की बहनों को बुलाया गया। उनसे उनके वर्तमान कार्य, शिक्षा व परिवार के बारे में चर्चा की गई, जिसमें 48 पूर्व छात्र, छात्राओं ने भाग लिया। सिलाई की कुछ बहनों ने बताया कि सेवा भारती से सीखे गुणों को वे व्यवसायिक रूप में अपना कर अच्छी आय करके अपनी गृहस्थी को ठीक प्रकार से चला रहे हैं। कुछ बहने ज़रूरत मंद लड़कियों को निःशुल्क सिलाई भी सिखाती हैं। कुछ बच्चे जो इस विद्यालय से पढ़ कर गए हैं, वो अब बी.टैक व इलैक्ट्रिशियन का डिप्लोमा कर रहे हैं। सबसे प्रमुख बात है कि उन्होंने जो संस्कार सेवा भारती से लिए उनको अपने परिवार में बांटा, जिससे उनके अपने परिवार में भी अच्छे परिर्वतन हुए। कुछ बच्चों ने सेवा भारती के कार्यकर्ता बनकर सामाजिक सेवा करने की इच्छा व्यक्त की। इस अवसर पर सेवा भारती के ज़िला अध्यक्ष श्री रतन लाल कामरा ने बताया कि अपने संस्कारों से समाज में फैली हुई बुराई को मिटाना है तथा सेवा भारती के ज़िला संरक्षक श्री कांशी राम गोयल, नगर इकाई अध्यक्ष श्री कमल किशोर सर्राफ, नगर सचिव श्री विकास लाम्बा व प्रकल्प प्रमुख श्री चाननमल शर्मा, हरीश शर्मा, मुख्याध्यापिका श्रीमती सरिता रानी व स्कूल स्टाफ उपस्थित था।

-संदीप गोयल

सफलता का रहस्य

एक साधु जंगल में बैठा तपस्या कर रहा था। देश का राजा अपने मंत्रियों और सिपाहियों के साथ जंगल में शिकार खेलते हुए भटक गया। राजा के सैनिक उन्हें और राजा अपने सैनिकों को ढूंढने लगे। तभी कुछ सिपाही साधु के पास आए और बोले- 'क्यों रे साधु?' हमारे राजा को तो नहीं देखा?' साधु चुपचाप आंखे बंद किए बैठा रहा। फिर राजा का मंत्री आया- 'महाराज! क्या हमारे सिपाही और राजा इधर आए थे।' साधु उसी तरह आंखें बंद किए बैठा रहा। अंत में राजा आया। उसने कहा- 'मुनिवर मुझे क्षमा करें, मैं आपकी साधना में विघ्न डाल रहा हूँ, किन्तु मैं मुसीबत में हूं, क्या मेरे मंत्री और सिपाही यहां आए थे? अब साधु ने बिना आंख खोले कहा- 'हां राजन आए थे। पहले सिपाही आए और फिर मंत्री आया। अब तुम राजा आए हो। राजा ने पूछा - 'लेकिन मुनिवर! आपने तो अपनी आंखें बंद कर रखीं हैं - यह कैसे जाना कि कौन क्या है?' साधु ने कहा- 'उनकी भाषा-बोली से मैं समझ गया कि कौन क्या है?' इसलिए हम अपनी भाषा-बोली से दूसरों द्वारा पहचाने जाते हैं। अपना अच्छा व्यवहार अभ्यास करने से होता है। आप लोगों के बीच जितना आएंगे-जाएंगे, मिलेंगे, उससे आपकी भाषा में उतना ही सुधार आएगा। अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष और क्रोध हमारे सद्व्यवहार और मधुर -वाणी के शत्रु हैं। सफलता का रहस्य यही है कि इन बुराईयों को त्याग कर

मिलनसार बनें। आपका व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि एक बार जो आपसे मिल ले, वह आपका ही होकर रह जाए।

युग को बदलने का योग

भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी होने का संकेत : 21 जून को 'विश्व योग दिवस' मनाया गया। यह इस सत्य का उद्घोष है कि भारतीय संस्कृति विश्व संस्कृति बनने की ओर गतिशील हो चुकी है। इसे नवयुग का आग़ाज़ माना जाए तो इन हलचलों को, इक्कीसवीं सदी में उज्ज्वल भविष्य के आगमन को, भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी होने के रूप में निहारा जा सकता है। 21 जून को मनाया गया 'विश्व योग दिवस', परिवर्तन और सृजन की सामयिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उठाया जा रहा एक महत्वपूर्ण कदम है। आज व्यक्ति में दुष्टता और समष्टि में भ्रष्टता के तत्त्व बढ़ गए हैं। समूहगत सहकारिता, कुंठित हो गई है और संकीर्ण स्वार्थपरता का बोलबाला है। ऐसी दशा में बड़े परिवर्तन से कम में काम नहीं चल सकता। प्रवाह को उलटना बड़ा काम है, विशेषतया जब निकृष्टता की सड़क पर घुड़दौड़ मच रही हो तो उन की लगाम पकड़ना और उलटने के लिए विवश करना न केवल एक बहुत बड़ा काम है, बल्कि उसके साथ ही अति कठिन भी और श्रम साध्य भी है। क्रांतियों की बातें करना सरल है, योजनाएं बनने में भी देर नहीं लगती, किन्तु उन्हें कर दिखाना और सफल बनाना दुष्कर है। इस दृष्टि से क्षेत्रीय और सामयिक क्रांतियां भी आंशिक रूप से ही सफल हो पाती हैं, फिर 600 करोड़ मनुष्यों की मनःस्थिति को बदल देना कितना कठिन कार्य है। इसकी कल्पना करने पर सामान्य बुद्धि हतप्रभ हो जाती है, फिर भी काम तो काम ही है। महाकाल के सुनिश्चित संकल्प को पूरा तो होना ही है, वह होकर ही रहेगा। दूसरा विकल्प भी तो नहीं। यह जीवन और मरण का चौराहा है, जहां आज की दुनिया आ खड़ी हुई है। यहां से आगे बढ़ने के लिए दो मार्ग हैं- एक सर्वनाश, दूसरा नवसृजन। सर्वनाश के दृश्य तो दुनिया देख ही रही है। 21 जून 'विश्व योग दिवस' को नवसृजन के अरुणोदय को भारतीय संस्कृति की स्वीकृति व व्यापकता के रूप में देखा जा सकता है।

'विश्व योग दिवस' का अर्थ है- स्वस्थ जीवन, स्वच्छ जीवन, श्रेष्ठ जीवन के लिए विश्वव्यापी अलख जगाना। विश्व मानवता की इस सच्चाई के लिए तो पहले भी कई चिकित्सा विधियां प्रचलित प्रचारित रही हैं। अब कहीं

न कहीं सबको अहसास होने लगा है कि स्वास्थ्य के लिए औषधियां पर्याप्त नहीं हैं, जीवन का स्वच्थ होना भी ज़रूरी है। अराजक हिंसा, बलात्कार, भ्रष्टाचार से घिरा हुआ समाज, शरीर व मन से स्वस्थ नहीं हो सकता। स्वस्थ तन के लिए स्वच्छ मन ज़रूरी है। स्वस्थ जीवन की मांग को स्वच्छ जीवन ही पूरी कर सकता है।

स्वस्थ शरीर व स्वच्छ मन का समन्वय है योग : इसका प्रकट रूप भले ही आसन-प्राणायाम जैसी क्रियाओं में दीखता है, पर इसका अदृश्य आधार यम-नियम में ही समाहित है। जनमानस का परिष्कार और देवयुग का निर्धारण, इसके तत्त्वज्ञान के आलोक से ही संभव है। हाँ, यह सच है कि कुछ लोगों ने योग की प्रक्रियाओं व प्रयासों को शारीरिक व्यायाम तक सीमित कर दिया है। वस्तुतः यह इतना स्वल्प व सीमित नहीं है। योग के आसन-प्राणायाम से जुड़ी योग की जीवन शैली में मानवीय चिंतन और चरित्र का देवत्व की दिशा में ले जाने वाले सभी तत्त्व विद्यमान हैं। भारत का पुरातन अतीत इस सत्य का सदा से साक्षी रहा है। इसके अवलंबन से पुरातन युग में स्वर्गीय परिस्थितियों का लाभ धरती के निवासी उठाते रहे हैं। पुनर्जागरण की इस संधिवेला में वही पुरातन पुनर्जीवित हो रहा है। इसमें सतयुगग की वापसी के सभी संकेत समाहित हैं। आज सतयुग की वापसी आश्चर्यजनक तो लग सकती है, पर यह असम्भव भी नहीं है।

देखने वाले देखते हैं और जानने वाले जानते हैं कि जब कभी सृजनात्मक परिवर्तन हुए हैं तो अंतर्जगत में आदर्शवादिता अपनाने वाली उमंगे, आँधी-तूफान की तरह उमड़ी हैं और उनके प्रचंड प्रवाह में पत्ते-तिनके तक आकाश चूमने का असंभाव्य, संभव करके दिखाते रहे हैं। यही है युग-परिवर्तन की संधिवेलाओं में अपनी प्रमुख भूमिका निभाने वाली समर्थता, जो उत्पन्न तो अंतर्जगत में होती है, पर उलटकर सारे वातावरण को रख देती है। अपने समय में युग-परिवर्तन की यही पुण्य वेला है। 21 जून को विश्व योग दिवस मनाए जाने की उद्घोषणा में इस सत्य को स्पष्ट और प्रकट रूप में देखा जा सकता है। बस, आवश्यकता इस संबंध में घटित हुए घटनाक्रमों को सूक्ष्मता और गहराई से देखने की है। विगत वर्ष सितंबर महीने में भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र में अपने पहले हिन्दी संबोधन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की बात उठाई थी। बाद में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के राजदूत अशोक मुखर्जी ने विधिवत् प्रस्ताव पेश किया।

इस प्रस्ताव के मसविदे में कहा गया कि योग स्वास्थ्य के लिए समग्र पहल प्रदान करता है। इस प्रस्ताव में 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने के अलावा कहा गया कि योग के फायदे की जानकारियाँ फैलाना दुनिया भर के लोगों के स्वास्थ्य के हित में होगा। प्रस्ताव में सभी सदस्य देशों, पर्यवेक्षक देशों, संयुक्त राष्ट्र से जुड़े संगठनों, अन्य अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय निकायों से योग के बारे में जागरुकता फैलाने के लिए यह दिवस मनाने की अपील की गई। भारत ने यह प्रस्ताव तैयार किया और इस विषय में भारतीय मिशन ने अक्तूबर में संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक अनौपचारिक परिचर्चा आयोजित की, जिसमें अन्य प्रतिनिधियों ने इस विषय पर अपनी राय रखी। भारत को अपने इस प्रयास में भारी सफलता मिली और 193 सदस्यीय महासभा में 173 सदस्य, 9 दिसम्बर को उसके इस प्रस्ताव के सहप्रायोजक बन गए। अब तक यह संयुक्त राष्ट्र महासभा के किसी भी प्रस्ताव के लिए सहप्रायोजकों की सबसे बड़ी संख्या है। इस सत्य को सभी ने स्वीकार किया कि योग 5,000 वर्ष से भी अधिक पुरानी भारतीय शारीरिक-मानसिक एवं आध्यात्मिक पद्धति है, जिसका लक्ष्य शरीर एवं मस्तिष्क में सकारात्मक परिवर्तन लाकर स्वस्थ शरीर व स्वच्छ जीवन को मूर्त रूप देना है।

योग दिवस मनाने के इस प्रस्ताव को उत्तरी अमेरिका के 23 देशों ने, दक्षिण अमेरिका के 11 देशों ने, यूरोप के 42 देशों ने, एशिया के 40 देशों ने, अफ्रीका के 46 देशों ने और प्रशांत महासागरीय क्षेत्र के 12 द्विपीय देशों ने समर्थन दिया है। इसे अदृश्य शक्तियों का दृश्य प्रभाव कहेंगे कि संयुक्त राष्ट्र महासभा में इतने विराट बहुमत से प्रस्ताव पारित होने का रिकार्ड बन गया। इससे पहले इतने भारी समर्थन के साथ महासभा में कोई अन्य प्रस्ताव पारित नहीं हुआ। इतना ही नहीं, संयुक्त राष्ट्र में विश्व योग दिवस के प्रस्ताव ने एक दूसरा रिकार्ड भी कायम किया। यह रिकार्ड बना 90 दिन में किसी देश के प्रस्ताव को पारित होने का। इससे पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था। विश्व योग दिवस के प्रस्ताव पारित होने और लागू होने पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान-की-मून ने कहा- '21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के तौर पर स्वीकार किए जाने पर आधुनिक दुनिया में स्वास्थ्य और मानव कल्याण के क्षेत्र में योग के लाभों पर ध्यान खिंचेगा।' अपने इस वक्तव्य में मून ने आगे कहा- 'योग एक ऐसी परम्परा है, जिससे शांति व विकास में योगदान मिलेगा।' संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें अधिवेशन के अध्यक्ष सैम कुटेसा ने अपने संदेश में कहा कि, '172 से भी अधिक देशों द्वारा इस प्रस्ताव को समर्थन देने से पता

चलता है कि दुनिया भर के लोगों को योग कितना प्रभावित करता है।' कुटेसा ने कहा, कि वह भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इस पहल के लिए उन्हें बधाई देते हैं। इस फैसले पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट प्रतिक्रिया दी- 'प्रफुल्लित! संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मनाने की स्वीकृति दी गई है। मेरे पास अपनी खुशी को बयाँ करने के लिए शब्द नहीं हैं। मैं इस फैसले का स्वागत करता हूँ।' इसी के साथ दुनिया भर के उन 172 से भी अधिक देशों का शुक्रिया कहा, जिन्होंने 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मनाए जाने के प्रस्ताव पर मोहर लगाई।

इस संदर्भ में प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी कहा, कि 'योग में पूरी मानवता को एकजुट करने की शक्ति है। योग में ज्ञान, कर्म और भक्ति का समागम है। मैं वर्षों से योग करता रहा हूँ। योग मेरे जीवन का सहारा है, इसलिए मैं विशेषकर युवाओं से अपील करता हूँ कि वे इसे दैनिक जीवन में अपनाएँ। मुझे पूरा भरोसा है कि इससे उनका जीवन बदल जाएगा।' भारत की विदेशमंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने इस हेतु 9 मार्च, 2015 को जवाहरलाल नेहरू भवन में एक बैठक बुलाई। इस बैठक में शांतिकुंज और देव संस्कृति विश्वविद्यालय को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

यह अनुभव करने में तनिक भी कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि **युग-परिवर्तन की सुखद संभावना** के साकार होने का समय आ पहुँचा है। जिन आँखों ने पिछले दिनों विनाश का दृश्य देखा है, 'वहीं आँखें अगले समय में सृजन को साकार होता हुआ भी देखेंगी।

समय आ गया है कि युगसृजन की चेतना व्यापक बने। ऐसे में जिनके अंदर अच्छाई है, सृजन की उमंगे हैं, वे इस महाकार्य के माध्यम अवश्य बनेंगे। उन्हें सृजन की अदृश्य चेतना, वर्तमान पीढ़ी के लिए गौरव गरिमा और भावी पीढ़ी के लिए सुखद सम्भावनाओं के केन्द्र अवश्य बनाएगी। समय अति महत्त्वपूर्ण है, इसी में भावी कल्पवृक्षों का रोपण होना है। भविष्य में जब इन कल्पवृक्षों के फलित होने का अवसर आएगा। जो होने जा रहा है उसके संबंध में हम सबको प्राणपण से उत्साहपूर्वक आगे आना चाहिए। 'विश्व योग दिवस' एक अवसर था, ऐसे अनेक व अनगिनत अवसर अभी और आने वाले हैं। इस अवसर व आने वाले अवसरों से जुड़कर हम सबको अपनी प्रमाणिकता सिद्ध करनी है।

-साभार 'अखण्ड ज्योति (संक्षेप)

नया युग लाने का आया है त्यौहार, सेवा और समर्पण से होंगे स्वप्न साकार,

सदा से रही है हमारी यही परम्परा, हम सब मिलकर रचेंगे नया सुखी संसार।

सब समग्र स्वास्थ्य की 'साधना' करें, आओ! स्वस्थ विश्व की 'प्रार्थना करें।

स्वस्थ हों शरीर और पुष्ट प्राण हों, मन सभी के स्वस्थ हों, विचारवान हों।
हों सभी शतायु आओ! कामना करें, आओ! स्वस्थ-विश्व की प्रार्थना करें।
हों विवेकशील हम, भाव से भरे हुए, हों हृदय उदार, स्नेह से सने हुए।
हों सभी सुखी, सभी यह भावना करें, आओ! स्वस्थ-विश्व की प्रार्थना करें।
जल, थल, नभ सभी प्रदूषण-मुक्त हों, अन्न, फल, मेवे, आरोग्य-युक्त हों।
औषधियां अमृत की वर्षणा करें, आओ! स्वस्थ-विश्व की प्रार्थना करें।
सदाचारी हों सभी, धर्मशील हों, सभी 'लोकसेवी' बन, क्रियाशील हों।
सभी देवतुल्य 'स्वर्ग' सर्जना करें, वसुधैव कुटुम्बकम् की प्रार्थना करें।

-मंगलविजय 'विजयवर्गीय'

31 जुलाई गुरू पूर्णिमा

'गुरू' शब्द दो अक्षरों 'गु' और 'रू' से मिलकर बना है। 'गु' शब्द का अर्थ है-अंधकार तथा.'रू' का अर्थ है-तेज, प्रकाश। इस प्रकार गुरू शब्द का अर्थ हुआ-जो अपने तेज से, अपने प्रकाश से, अपने ज्ञान से - शिष्य के अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करे। गुरू का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान कराने तक सीमित नहीं है। गुरू वह है, जो हर प्रकार के अंधकार को दूर कर मनुष्य के जीवन को सार्थक बना देता है। सच कहें तो गुरू कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि एक शक्ति का नाम है, वह शक्ति, जो अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाए। देखने में गुरू भले ही एक साधारण व्यक्ति प्रतीत हो, किंतु वस्तुतः वह शक्ति का एक पुंज है, जो जीवन के समस्त अंधकार को दूर करने में समर्थ होता है। गुरू पूर्णिमा का यह विशेष पर्व गुरू को समर्पित है। गुरू पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहते है। आषाढ़ मास की पुण्यपूर्णिमा को श्री वेद व्यास जी का जन्म हुआ था। इसी पूर्णिमा के दिन उन्होंने महाभारत की रचना का श्री गणेश किया था। वे कृष्णवर्णा थे, इसलिए उनका नाम कृष्णद्वैपायन भी पड़ा। महर्षि वशिष्ट के पौत्र व महर्षि पराशर एवं धीवरकन्या सत्यवती के पुत्र, कुछ समय बाद माता की आज्ञा प्राप्त कर तप के लिए बद्रिकाश्रम चले गये थे। वेदों को विस्तार प्रधान करने के कारण ही इनका नाम वेदव्यास भी पड़ा। गुरू की महिमा अनंत है। इनका थोड़ा सा सांनिध्य भी मनुष्यों को सद्गति प्रदान करता है, इसलिए सभी ये स्वीकारते हैं कि गुरू की भक्ति ही सर्वश्रेष्ठ है। कबीरदास कहते हैं :

तीरथ नहाये एक फल, सन्त नहाये फल चार,

सद्गुरू मिलें अनन्त फल, कहित कबीर विचार।

गुरू की महिमा का गान करते हुये भगवान शिव पार्वति को कहते हैं :

ध्यानमूलं गुरोमुर्तिः पूजा मूलं गुरोःपदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।

अर्थात्- गुरूदेव की भावमयी मूर्ति ध्यान का मूल है, उनके चरण कमल पूजा का मूल हैं, उसके द्वारा कहे गये वाक्य मूल मन्त्र हैं, उनकी कृपा ही मोक्ष का मूल है। हमारी भारतीय संस्कृति में गुरू का पद सर्वोच्च माना गया है। गुरू को ब्रह्मा, विष्णु और महेष के तुल्य माना गया है। गुरू से ही हमें शिक्षा व विद्या मिलती है, जो हमें जीना सिखाती है। महाकवि जायसी का कहना है कि इस संसार में गुरू के बगैर कोई भी उस परब्रह्म को प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए गुरू सेवा को सनातन धर्म में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस पर्व पर श्रद्धांजली के रूप में गुरूदक्षिणा देने की भी प्रथा है। मातृऋण एवं पितृऋण की तरह गुरूऋण, ऋषिऋण भी रहता है और उसे अपने धर्म एवं अपनी संस्कृति के प्रति आस्था रखने वाले किसी न किसी रूप में चुकाकर अपने को आंशिक रूप में उऋण बनाने का प्रयत्न किया करते हैं। इसलिए गुरूदक्षिणा भी गुरूपूर्णिमा के अवसर पर देनी ही चाहिए।

इस बार की गुरूपूर्णिमा का ये गुरूपर्व हमारे कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्वों को स्मरण कारने के लिए ही है। इस महान उत्तरदायित्व को निभाये बिना कोई गति नहीं है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने परम्पवित्र भगवाध्वज को गुरू के परम्पद पर अधिष्ठित किया है। मनुकाल से हम विश्व के मानव को आह्वान करते आए हैं 'मनुर्भवः' इन्सान बन, **'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्'** आओ! सारे विश्व के मनुष्यों को आर्य (श्रेष्ठ) बनाएं। इतिहास में जबसे श्रीराम, भरत, श्रीकृष्ण, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, वीर विक्रमादित्य, अशोक, पंजाब के दस गुरू, महाराणा प्रताप, समर्थगुरू रामदास, शिवाजी, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी विरजानन्द, स्वामी दयानन्द, महर्षि अरविन्दुघोष व अन्य अनेक महापुरषों की परम्परा का प्रतीक रूप परम्पवित्र भगवाध्वज को संघ ने गुरू माना है, उससे प्रेरणा लेकर हमें अपनी भारतमाता को विश्वगुरू के सिंहासन पर बिठाना है। आओ, हम सब मिलकर इस गुरूपूर्णिमा पर प्रण लें कि इस

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा द्विमासिक पत्रिका, स्वामित्व- सेवा भारती (पंजी.) हरियाणा।
मुद्रक : जुगल बठला, मै. बठला प्रिंटर्ज़, विवेकानन्द विद्यालय परिसर, करनाल।
सम्पादक व प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा, ई. 230, अर्जुन गेट, करनाल-132001

21वीं शताब्दी को भारत की शताब्दी बनाकर छोड़ेंगे। -सम्पादक

सेवा भारती, पुनहाना (मेवात)

20वां नेत्रदान : 11 जून, 2015 को पुनहाना कस्बे के व्यापारी श्री वासदेव सुपुत्र श्री पोखर दास जी पंजाबी के अचानक निधन हो जाने पर सेवा भारती पुनहाना की प्रेरणा से इनके परिवार के सहयोग से मरणोपरांत आँखें दान की गई, श्री वासदेव जी 64 वर्ष के थे। यह आँखें गुड़गांव से निरमया आई रिसर्च सेन्टर के डाक्टरों द्वारा दान ली गई। सेवा भारती, पुनहाना द्वारा यह 20वां नेत्रदान कराया गया। इस अवसर पर नेत्रदान प्रमुख श्री मुकुल गोयल, श्री सतपाल कालड़ा व श्रवण कुमार मौजूद रहे।

वन विहार : 5 जुलाई, 2015 को सेवा भारती, पुनहाना कार्यालय से एक बस द्वारा प्रातः 7 बजे उत्तर प्रदेश के बृजमण्डल क्षेत्र में नन्दगांव, बरसाना व गोवर्धन धर्म स्थलों के दर्शनार्थ बाल संस्कार केन्द्र के बच्चे व सिलाई सेन्टर की बहनों के साथ प्रस्थान किया गया। यह कार्यक्रम हरियाणा प्रान्त के प्रकल्प प्रमुख श्री विशनदयाल जी वर्मा की अध्यक्षता में किया गया। बस में बहनों व बच्चों ने भजन व देशभक्ति के गीत गाकर सफर का आनन्द लिया। प्रातः 9 बजे नन्दगांव पहुंचकर श्री नन्दलाल (श्रीकृष्ण) मन्दिर के सभी ने दर्शन किय व श्रीकृष्ण जी की लीलाओं के बारे में जानकारी ली। वहां अल्पाहार भी किया गया। बाद में दोपहर 12 बजे बरसाना पहुँचकर राधा-रानी के मन्दिर में दर्शन किये व वहां के इतिहास की जानकारी ली। वहाँ मन्दिर में भजन-कीर्तन द्वारा सभी को मंत्रमुग्ध ा कर दिया था। 1 बजे सभी ने मिलकर सहभोज किया। बाद में सभी को रंगीली महल के दर्शन कराये गये जो काफी भव्य इमारत है। सायं 4 बजे गोवर्धन आ गये, जहां सभी ने मानसी गंगा में स्नान किया व गोवर्धन भगवान की प्रतिमा पर दूध चढ़ाया। सिलाई सेन्टर की बहनों ने गंगा जी में नौका विहार भी किया। इस कार्यक्रम में बाल संस्कार केन्द्र के 10 बच्चों, सिलाई सेन्टर की 10 बहनें, कार्यकारिणी व महिला मण्डल के 27 सदस्यों के साथ कुल संख्या 57 रही। इस अवसर पर श्री राजीव मंगला(जि. सचिव), श्री गोबिन्द राम सोनी(अध्यक्ष), सतपाल कालडा (उपाध्यक्ष), श्री मनीष अरोड़ा(कोषाध्यक्ष), श्री मुरारी लाल गोयल, सचिन जी, महेश जी, मा. अशोक व गिरिश बंसल मौजूद थे।

8वीं किस्त- आपात्काल में एक स्वयंसेवक का संघर्ष

पिछले चालीस वर्षों में पहली बार है जब आपात्काल (1975-1977) के बारे में खुलकर स्वतन्त्रतापूर्वक लिखा जा रहा है, फिर भी कुछ गुलाम ज़हनियत के लोग हैं, जो प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की ओर उंगली करके दबी ज़बान में इशारा करते हुए कहते हैं-कि आज फिर से इमरजैन्सी लगाने का माहौल बनाया जा रहा है। सारी दुनिया को जानकारी है, कि उस आपात्काल का अगर किसी ने डटकर विरोध किया था, तो वह केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा जनसंघ के लोग ही थे, जिनके एक लाख से अधिक लोगों को जेल में बन्द कर दिया गया था। उस समय की खरपतवार से पैदा कुछ लोग जिनके आचरण से 1980 में श्रीमती इन्दिरा गाँधी सत्ता में वापिस लौटी थी, आज वही तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेता टर्राते फिरते हैं और उस आपात्काल में संघर्ष करने वाले शूरवीरों को ऊल-जलूल गालियाँ देते फिरते हैं। मीडिया के जो लोग आज जी खोलकर लिख रहे हैं, उनमें से अधिकतर, उस समय ज़मीनदोज़ हो गये थे। 14 जनवरी, 1976 को हम तीन साथियों ने चण्डीगढ़ में हरियाणा विधान सभा पर सत्याग्रह किया था। लगभग दो मास जेल में बिताने के पश्चात् बाहर कार्यकर्त्ताओं के अभाव के कारण संगठन ने मेरी ज़मानत का प्रबन्ध कर दिया था-इसकी चर्चा अगले अंक में करेंगे। जहाँ तक मुझे याद है मैं मध्य मार्च-76 में बुढ़ैल जेल चंडीगढ़ से छूटकर आया था। श्री प्रेम जी गोयल से मिलने पर, उन्होंने मुझे कहा, कि तुम अब अपनी प्रैस पर बैठो, क्योंकि धर-पकड़ कम हो गई है, तुम इतने बड़े नेता अभी नहीं बने कि तुम्हें सरकार बन्दी बनायेगी। मैंने कहा- पुलिस किसी को पकड़े या न पकड़े, मुझे ज़रूर बन्दी बनायेगी ख़ैर.. .

23 जून, 1976 दोपहर के समय डी॰ ए॰ वी॰ महिला महाविद्यालय के प्राध्यापक प्रो॰ यशपाल जी के साथ मैंने अपनी प्रिंटिंग प्रैस में भोजन करना प्रारम्भ ही किया था, कि प्रैस के सामने सड़क पर खड़खड़ाती हुई पुलिस की जीप आकर रुकी, मैं समझ गया कि गिरफ़्तारी होने वाली है। मैंने प्रो॰ साहिब को तुरन्त कहा, कि आप कहना-मैं प्रिंटिंग कराने आया हूँ, नहीं तो आप पर मुसीबत आ जायेगी। इतने में एक पुलिस इंस्पैक्टर तथा तीन पुलसिये प्रैस में घुस आये। सबसे पहले इंस्पैक्टर ने पुलसिये अन्दाज़ में प्रो॰ साहिब से पूछा, तू कौन है बे? मैंने कहा ये प्रो॰ साहिब हैं, कॉलेज में पढ़ाते हैं। ठीक है, ठीक है- यो के लेण आया थारे धोरे ? प्रो॰ यशपाल जी ने कहा, मैं कुछ प्रिंटिंग

कराने आया था। भाग ले छोरे, फिर न आईयो यहाँ। इंस्पैक्टर ने मेरी ओर देखकर कहा, चल तू गाड़ी में बैठ जा। मैंने पूछा, "मैं खाना खा लूँ? खाले, इंस्पैक्टर ने बड़ी बेरुख़ी से हामी भर दी। मैंने खाना खाया, अन्त में दो घूँट पानी पीकर अपने आपको व्यवस्थित किया और जाकर जीप में बैठ गया। करनाल सिटी थाने में ले जाकर सीखचों के पीछे बन्द कर दिया। थोड़ी देर बाद श्री बृजभूषण जी गुप्ता और बाद में श्री स्वर्ण जी आनन्द भी आ गए। तीनों एक ही बैरक में 2 घण्टे तक बन्द रहे। श्री आनन्द और गुप्ता जी पर धारा 107, 151 में जेल भेज दिया गया। सायं 6.30 बजे मुझे हथकड़ी में जकड़कर फिर से जीप में बिठाया। इंस्पैक्टर और दो सिपाहियों के साथ मुझे ज़िला जेल ले गए। रास्ते में इंस्पैक्टर ने वायरलैस से अपने अधिकारियों को सूचना दी, कि ओमप्रकाश अत्रेजा को MISA में बन्दी बना लिया गया है और जेल में ले जा रहे हैं। इंस्पैक्टर ऐसे बात कर रहा था जैसे उसने किसी बहुत बड़े डाकू को गिरफ़्तार करके बहुत बड़ा काम कर दिया है। मुझे ज़िला जेल डियोढ़ी में ले जाकर बिठा दिया गया। रात्रि लगभग 8 बजे मुझे जेल के कार्यालय में ले जाया गया, तब तक मेरे हाथों में पड़ी हथकड़ी खोली नहीं गई थी। मैंने देखा बड़ी सी मेज़ के सामने कुर्सी पर करनाल ज़िला के महाबदनाम एस.एस.पी. वाई॰ हरिशंकर विराजमान हैं। मुझे देखते ही, अरे! तुम ही ओम प्रकाश अत्रेजा हो, हमने तो समझा था-कोई लम्बा चौड़ा छोरा होगा, तुम तो ठिगने से साधारण से लड़के हो। मैंने कहा, क्यों लम्बे-चौड़े 6¼ फुटे लोग बड़े बदमाश होते हैं? वाई॰ हरिशंकर 6¼ फुटा था, गुस्से में बोला, क्या मतलब है तेरा? बात बदल कर मैंने कहा, साहब! मैं तुम्हारे सामने

हाथ जोड़कर इस लिए खड़ा हूँ क्योंकि मेरे दोनों हाथ तुम्हारी हथकड़ी में जकड़े हुए हुए हैं। अगर हथकड़ी न लगी होती तो क्या कर लेता तू? एस॰पी॰ ने कहा। अब तो सब कुछ आपने करना है जनाब, मैं क्या कर सकता हूँ- मैंने कहा। देखो ओम प्रकाश! मैं अब भी तुम्हें छोड़ सकता हूं, अगर तुम मुझे यह बता दो, कि जो इश्तहार तुम्हारे पास हैं, वे कहां से आये हैं? वे हमें सौंप दो। मैंने पूछा- कौन

से इश्तहार? एस.एस.पी. ने कहा-वे इश्तहार- जिसमें श्रीमती इंदिरा गांधी को जेल के सीखचों के पीछे दिखाया गया है, उस पर लिखा है-तानाशाह की आखिरी जगह। मैंने कहा- आपकी सूचना ग़लत है जनाब, आपकी सी॰ आई॰ डी॰ लचर है, मेरे पास इस प्रकार के कोई इश्तहार नहीं हैं। एस॰ पी॰ बोला- हमें पक्की ख़बर है, इश्तहार तुम्हारे पास आए हैं और 25 जून की रात्रि को तुमने शहर की दीवारों पर चिपकाने थे। मैंने कहा- सुनो, एस॰पी॰ साहब, अगर आपकी सी॰आई॰डी॰ इतनी चौकस आप मानते हैं, तो उसने आपको यह भी बताया होगा, कि मैं कभी झूठ नहीं बोलता, इसलिए बताता हूँ, अगर मेरे पास ऐसे इश्तहार आए भी होते, तो मैं आपको कुछ भी नहीं बताता, दूसरे अब आप मुझे छोड़ भी नहीं सकते, आपके पास बन्दी बनाने का अधिकार तो है, छोड़ने का नहीं, इसलिए अब आप कुछ नहीं कर सकते, अपना समय बर्बाद न करें। एस॰पी॰ वाई. हरिशंकर उठकर चल दिया। यह मुझे बाद में पता चला कि 25 जून की रात्रि को ऐसे इश्तहार श्रीमती इन्दिरा गांधी के आवास के अन्दर लगाए गए थे। थोड़ी देर बाद मेरी हथकड़ी खोल दी गई। मुझे जेल के एक अहाते में ले जाया गया। वहाँ डॉ॰ मंगलसेन, चौ॰ चाँदराम, श्री फ़तेचन्द विज, डॉ॰ महेन्द्र रंजन, सोनीपत के एक सरदार सुजान सिंह, श्री शिवकुमार शर्मा, श्री जगजीतसिंह पोहलू, कर्नल वीरेन्द्र सिंह, एक CPI नेता दादरी के श्री कासनी जी, राणा नरेन्द्रसिंह, सरदार रघुवीर सिंह, चौ॰ रघुवीरसिंह सैनी, जेल में वहाँ विराजमान थे। मुझे वहाँ देखकर सब इकट्ठे हो गए। डॉ॰ मंगलसेन जी ने मुझे देखते ही कहा- अरे, ओमप्रकाश! तुम कब से इतने बड़े नेता बन गए कि तुम्हें भी इंदिरा गांधी ने MISA में गिरफ़्तार कर लिया? रात्रि एक बजे तक बाहर की आपात्काल की खबरों की चर्चा चलती रही। अगले दिन दोपहर को करनाल के उपायुक्त श्री सुखदेव प्रसाद भी मुझे देखने आए, उन्होंने भी मुझे देखकर आश्चर्य प्रकट किया।

-अगले अंक में जारी

आदर्श महामानव, आदर्श स्वयंसेवक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आदर्श प्रचारक, सैंकड़ों स्वयंसेवकों के प्रेरणास्रोत पूजनीय श्री सोहन सिंह जी का 93 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उनकी अन्तिम क्रिया पर 18 जुलाई 2015 सायं 5 बजे ताल कटोरा स्टेडियम दिल्ली में उनके हज़ारों श्रद्धालुओं ने अश्रूपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।